RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-11
November -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]

विवेचित लेखिकाओं के लेखन में स्त्री संवेदना एवं द्वन्द्व के विविध आयाम

गिरजेश कुमार

शोधार्थी हिन्दी विभाग राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय किशनगढ़, अजमेर (राज.)

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 16 Nov 2019

Keywords
विसंगतियों, साहित्यकारों, सूक्ष्मज्ञान, प्रवृत्ति, मानसिक, वैश्वीकरण, मीडिया

ABSTRACT

यह 21 वीं सदी का वह दौर है जो विविधता, बैचेनी, संवेदना से भरा हुआ है। आज की स्त्री लेखिका जीवन के सभी रंगों का सूक्ष्म रूप से लिख पढ़ रही है। स्त्री लेखिकाओं के लेखन को लेकर प्रश्न उठाये जाते हैं कि वह भावनाओं, संवेदनाओं, संबंधों, वासनाओं एवं विसंगतियों को ही अपने लेखन का केन्द्र बिन्दु बनाती है। ''महिला रचनाकारों की लेखनी हिन्दी साहित्य को पूर्णता प्रदान करने में सक्षम है। जिन्होंने साहित्य के क्षेत्र में अपनी सेवायें प्रदान करने वाले रचनाकारों व नारी को अधिकतर मुख्य अंग बनाया है। नारी के संदर्भ में यह उक्ति प्रचलित है कि नारी को देवता भी नही समझ सके है। परन्तु एक नारी के लिए नारी को समझ पाना आसान होता है। इस कारण साहित्य जगत में नारी स्वरूपा साहित्यकारों का भी आना सार्थक हुआ। महिला साहित्यकारों ने नारी के मन के हर कोने में दबी हुई बातों को व चेष्टाओं का उद्धाटन करने में सफलता पाई है। देश की बदलती हुई सामाजिक और राजनीतिक गतिविधियों का असर समाज की महत्वपूर्ण कड़ी नारी पर भी पड़ा है। नारी के हृदय का सूक्ष्मज्ञान नारी के द्वारा प्रस्तुत किया जाना भी हृदय का सूक्ष्मज्ञान नारी के द्वारा प्रस्तुत किया जाना भी लेखन के क्षेत्र में उन दिनों एक नवीन सवा की भांति उद्धाटित हुआ था। वस्तुतः उपन्यास लिखने की प्रवृत्ति पुरूष साहित्यकारों की तुलना में देर से जागृत हुई परन्तु इनकी रचनाओं मे नारी जीवन की दुर्बलता एवं मानसिक, अधर्म साकार हो उठे हैं।''[1]

वैश्वीकरण और आधुनिकता का स्त्री पर प्रभाव

वैश्वीकरण विश्व के सभी देशों के क्रय–विक्रय घटनाओं का एक मंच प्रदान करता है। जहाँ सभी देश एक दूसरे में व्यापार करने के लिए नियम होते हुए भी स्वतन्त्र होते हैं। पूँजीवादी लोगों के लिए वैश्वीकरण (भूमण्डलीय करण) एक सुलभ बाजार उपलब्ध कराता है। वहीं उपभोक्ता को सस्ता एवं सुलभ आधार प्रदान करता है। आज हमें अच्छी से अच्छी वस्तुएं वैश्वीकरण के कारण है आसानी से सुलभ हो सकी है। हमारे लिए सरल, सुलभ, नयी तकनीकों ने वैश्वीकरण को लोगों के जीवन से जोड़ रखा है। बड़ी से बड़ी कम्पनियाँ भी इन तकनीकों के कारण व्यक्तियों से सीधे तौर से जुड़ चुकी है। वैश्वीकरण पूंजीवाद का एक नया स्वरूप है।

वैश्वीकरण का शाब्दिक अर्थ स्थानीय या क्षेत्रीय वस्तुओं या घटनाओं के विश्व स्तर पर रूपांतरण की प्रक्रिया है इसे एक ऐसी प्रक्रिया का वर्णन करने के लिए भी प्रयुक्त किया जा सकता है। जिसके द्वारा पूरे विश्व के लोग मिलकर एक समाज बनाते हैं। तथा एक साथ कार्य करते हैं। यह प्रक्रिया आर्थिक, तकनीकी, सामाजिक और राजनीतिक ताकतों का एक संयोजन है।[2]

वैश्वीकरण से जीवन का कोई क्षेत्र अछूता नहीं है। स्त्री जीवन पर भी वैश्वीकरण का प्रभाव पड़ा है। जहाँ पहले स्त्रियाँ आस–पास लोगों और वहाँ की स्थितियों से ही अवगत हो पाती थी वहीं आज शिक्षा और संचार साधनों के कारण विश्वस्तर की उपलब्धियों एवं समस्याओं से अवगत हो रही है। आज विश्व स्तर पर स्त्रियों का एक मंच बन रहा हैं। विश्व स्तर पर विभिन्न देशों में स्त्रियों पर हो रहे अन्याय, अत्याचार एवं शोषण से परिचित हो रही है एवं इन समस्याओं से लड़ने के लिए संघर्ष हेतु तैयार भी है। आज हिन्दी साहित्य उपन्यास लेखिका अपने उपन्यासों में विभिन्न पात्रों के माध्यम से इसका जिक्र भी कर रही है।

मीडिया और टीवी चैनलों ने स्त्रियों को एक नई आवाज दी है। पुरानी धारणाओं का खंडन किया। आज मध्य वर्ग भी अपनी सोच को बदल रहा है। जो स्त्रियां पहले घर तक सीमित थी आज घर के बाहर विभिन्न क्षेत्रों में समाज, राजनीति शिक्षा एवं व्यवसाय में सफल भूमिका निभा रही है। वैश्वीकरण के युग में स्त्रियों का ज्ञान इतना विकसित एवं विस्तृत हो चुका है कि अब से उन मुद्दों एवं विषयों की भी जानकारी रखने लगी है जो कल तक सिर्फ पुरूष के जानकारी में था। आज वे राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं पर तर्क–वितर्क कर रही है। रूढ़ियों से निकलकर अपनी नयी पहचान बना रही है, आत्मनिर्भर बन रही है। इन सभी चीजों को हिन्दी उपन्यास के स्त्री पात्रों की भूमिका ये देखा जा सकता है।

स्त्री पात्रों पर वैश्वीकरण और आधुनिकता का प्रभाव–

वैश्वीकरण के सन्दर्भ में कमल कुमार के उपन्यास पासवर्ड में नाइका ईमेल के माध्यम से आशीष को पत्र लिखती है – शामें बहुत सुहावनी हो जाती है। राष्ट्रीय अन्तराष्ट्रीय स्तर पर चिता है, पृथ्वी के बढ़ते तापमान से। ऋतु चक्र म होते परिर्वतन से।[3]

RRIJM 2015, All Rights Reserved

नाटको की दुनियाँ हमारी दुनियाँ की तरह रंग–बिरंगी विविधताओं से भरी, विषमताओं ओर विसंगतियों से भरपूरी होती है। एक नाटक बाहों दोक रतनधियम का जिसका मतलब है लोग या पूर्ण रंग नाटककार वैश्वीकरण की पृष्टभूमि में सोचता है और एक सवाल उठाता है। पत्र वह भी अंग्रेजी भाषा में (मणिपुर का नाटक) ज्ञान, प्रौद्योगिकी विकास के उत्कर्ष के बाद भी मनुष्य इतना दुःखी क्यो है?[4]

नदी उपन्यास में आकाशगंगा जब सास ससुर के पास होती है तब उसके ससुर जी कहते हैं पढने–लिखने वाली लड़कियाँ और कामकाजी युवतियों को पूरा ताजा खाना बनाने का समय ही कहाँ है? कभी किसी को बुलाना हुआ तो खाना बाहर से आ गया, कुछ दियों में लोंग हाथ की बनी ताजी रोटी का स्वाद ही भूल जायेंग, फुलका सिर्फ टेलीविजन में गेहूँ के आटे के विज्ञापन में ही देखेगें।[5]

निमला भुराडिऱया के उपन्यास गुलाम मंडी में वैश्वीकरण के कुछ दृश्य कबीर अक्सर हिन्दुस्तान के बाहर गया होता है, कभी मॉरीशस, कभी स्विटजरलैण्ड, लंदन और कभी न जाने कहाँ कहाँ शूटिंग न हो तो वह विदेशों में शो करने में बिजी रहता है। बचा हुआ समय ऊटी में जहाँ उसने बहुत बडा स्टेट खरीद रखा है, वहाँ वह आराम करता है वह जब कभी बाम्बे आता है।[6]

वैश्वीकरण के सन्दर्भ में स्त्री पात्रों की भूमिका में कमल कुमार के उपन्यास पासवर्ड में ई मेल के माध्यम से एक स्त्री जीवन के बारे में तुम्हें पता होगा कि जापान में धीशा गर्ल्स या कंफ्ट गर्ल्स होती है। आठ नौ साल की एक लड़की को उसका बाप घीसा हाउस में बेच देता है, जहाँ उसे खाना भी ठीक से नहीं मिलता, लेकिन उन्हें पुरूषों को रिझाने की कला में निपुण किया जाता है। फिर इनको पचास–साठ यहाँ तक की 80 साल के पुरूष जो भी ज्याद पैसा दे सके, खरीद लेता है। यह लड़की क्रियाटो है।[7]

आधुनिकता का प्रभाव स्त्री पात्रों में देखने को मिलता है। पौराणिक पात्रों में भी आधुनिक संदर्भों में नवीन दृष्टि दिखाई देती है। अहिल्या इन्द्र से आकर्षित हुई क्योंकि वह अपने मन का विरोध इस तरह प्रकट करना चाहती थी और इन्द्र इस लौकिक अतीव सुन्दरी के प्रति अपनी ऐन्द्रिक लोलुपता की वजह से आकर्षित हुआ। यह एक आपसी परस्पर बढावा देता हुआ दुर्निवार आकर्षण था। हालांकि इस घटना से पहले ही अहिल्या गौतम ऋषि के पुत्र शातानेदा की माँ थी। फिर भी कहीं न कहीं उसका स्त्रीत्व असन्तुष्ट था। यहाँ कन्या होने का गूढार्थ केवल माँ हो जाने से ही नहीं बल्कि एक प्रिया के सन्दर्भ में भी है और इंस आधार पर वह अपने और गौतम ऋषि के सम्बन्धों के यथार्थ तक नहीं पहुँच सकी। इस तरह पहली कन्या स्त्री न हो सकी, उसके अन्दर अपनी आंतरिक इच्छाओं की पुकार सुनने की क्षमता तो थी किन्तु उसमें मितृ मूलक समाज के आदेशों को चुनौती देने का साहस न था।[8]

यहाँ सत्यवती से अधिक कुन्ती कुमारी कन्या मानी गयी। मूलतः यह शब्द बर्जिनय कुमारी अपने शाब्दिक अर्थ के एकदम विपरित अर्थ का संकेत देता है। ईश्वर और फ्रोडाइट प्राचीन में सोपोटामिया तथा ग्रीक के प्रेम के देवता हैं जो कि वर्जिन कहलाए जाते थे। बाद में पितृसत्तामक संस्कृति में इन्हें अनैतिक और मर्यादाहीन घोषित कर दिया। कौमार्य का वरदान किसी स्त्री की केवल शारीरिक अवस्था नहीं वरन मानसिक अवस्था के लिए माना जाता है, जो कि वह किसी को भी बन्धन से सदैव मुक्त रही हो, किसी के दासत्व से या किसी एक निर्धारित पुरूष पर निर्भर होकर न रही हो। वह अपने आप में एक हो, पूर्ण स्वंयसिद्ध । एक पूर्ण व्यक्तित्व जो कि स्वंय से सम्बन्धित हो, चाहे वह अविवाहित कुमारी हो या अपनी पवित्रता अक्षुण्ण रखने को बाध्य न हो या अनचाहे संसर्ग करने को भी बाध्य न हो। यह मुक्ति का अधिकार चाहे तो वह सिकी अवांछित से सम्बन्ध नकार देने में प्रयोग कर सकती है। या किसी भी मनचाहे पुरूष को स्वीकार करने में प्रयोग कर सकती है। यह किसी भी स्त्री का अधिकार है, चाहे वह बहुत अधिक यौन अनुभव रखने वाली महिला के सन्दर्भ में ही क्यों न हो यहाँ तक कि एक वेश्या के लिए भी यह अधिकार है।[9]

दांपत्य संबंधों मे टूटन व विखराव –

शरद सिंह के उपन्यास कस्बाई सिमोन में स्त्री पात्र सुंगधा की अपनी बेटी को बेटी के निर्णय पर अपने पास रखी है उसका अच्छे से ख्याल रखती है, अच्छे से पालन पोषण करती है। वह सारी जिम्मेवारी को अपने कंधे पर लेती है जो एक पुरूष करता आया है, सुगंधा की माँ जीवन संघर्षों को स्वीकार करती है। बड़े ही साहस के साथ जीवन की चुनौतियों को अपनाती है। वही प्रभाव बेटी में भी विकसित हो जाता है। वैसे भी माँ का प्रभाव बेटी पर पिता का प्रभाव पुत्र पर जाता है। जब सुगंधा की माँ उसके पिता से तलाक लेने जा रही थी तब वह अकेले माँ के बारे में सोचती है उनके सोच के बारे में बताती है जो सुंगधा को प्रभावित किया। सुगंधा मुझे आज रात की गाड़ी से बाहर जाना है चल अपना थोड़ा सा सामान रख ले, तुझे नूतन के यहाँ छोड़ती हुई वहीं से निकल जाऊँगी। माँ ने उस दिन कार्यालय से लौटते हुए कहा।

कहाँ जाना है आपको मैने पूछा।

कल पेशी है तलाक वाली, माँ ने बताया।

मैं समझ गई वह पापा के पास जा रही है.....नहीं, पापा के शहर जा रही है, उनके पास नहीं।

माँ की एक बात मुझे अच्छी लगती थी कि वे मुझसे कोई बात छिपाती नहीं थी, भले ही मुझे समझ में आए या न आए। शायद माँ चाहती थी कि मैं जल्दी से जल्दी जीवन की सच्चाईयां समझने लगूं और अपना भला बुरा स्वंय तय करने की क्षमता पालूं। सचमुच मेरी माँ बहुत समझदार और संवेदनशील थी।[10]

RRIJM 2015, All Rights Reserved

मैं तेरे पापा से तलाक ले रही हूँ। वे तलाक नहीं देना चाहते हैं, लेकिन मैं उन्हें तलाक दे रही हूँ। भला यह कौन सी बात हुई कि वे मुझे अपने साथ भी न रखना चाहें और मुझे तलाक भी न दें। आखिर में क्या हूँ? माँ भावावेश में बोलती चली जा रही थी, सुगंधा सुन! तलाक की प्रक्रिया के दौरान तुझसे भी अदालत मैं पूछा जायेगा कि तू अपने पापा के साथ रहना चाहती है या अपनी माँ के साथ, तो जहाँ तू रहना चाहती हो मुझे बता दे। मैं तेरा दिल नहीं दुखाऊँगी।[11]

सुगंधा के पिता और माँ के बीच सुंगधा के भाई के मृत्यु के बाद माँ और पिता के बीच खटास उत्पन्न हो गया था। उसके कुछ समय बाद पिता का किसी दूसरी लड़की जो उसकी शिष्या थी उससे संबंध स्थापित हो गया। जिसके कारण दोनों के बीच लड़ाइयाँ होती।

''मेरे जन्म के चार माह बाद पापा और माँ के बीच यह अशोभनीय संवाद वाला झगड़ा। पहली बार मेरे सामने हुआ। इससे पहले झगड़ा शुरू होते ही माँ मुझसे कहती, सुंगधा अपने कमरे में जाओ।

माँ आदेश का पालन करती और अपने कमरे में आ जाती। पल दो पल धड़कते दिल से, दबे पाँव कमरे से बाहर झांकती और छिपकर माँ और पापा के बीच का झगड़ा देखती रहती। मुझे अब लगता है कि माँ ने जब दूसरी बार बच्चे को जन्म दिया था तो वह लड़का था अर्थात मेरा छोटा भाई। उसे पता नहीं कैसे निमोनिया हो गया और तीन माह की अल्पायु में चला गया। उसी समय से माँ और पापा के बीच दूरी बढ़ती चली गई।

बहुत बाद में पता चला कि पापा ने किसी शोधछात्रा को आश्रय दे रखा था उस छात्रा को शोधकार्य पूरा होने पर उसे अपने ही महाविद्यालय में लेक्चरर की नौकरी दिला दी पहले कच्ची और फिर जुगाड़ करके पक्की। पापा की अधिकांश शामें उसी के पास व्यतीत होती।[12]

साथ चलते हुए उपन्यास में दांपत्य संबंधों का टूटना व बिखराव अपर्णा और आशुतोष की बेटी काजोल की कैंसर हो जाने के कारण मृत्यु हो गयी। कैंसर हो जाने के वक्त अपर्णा का पूरा काजोल के देखरेख में बीतता इसी बीच तापसी से आशुतोष का सम्पर्क हो गया था। काजोल की मृत्य हो जाने पर आशुतोष अपर्णा को छोड़कर चला गया। ''अपनी बेटी के ब्लड कैंसर के साथ पाँच वर्ष की अथक लड़ाई ने उसे हर तरह से निचोड़ लिया था। वह अंदर से एकदम अशक्त अवश हो आई थी। बेटी ने साथ छोड़ा तो आज पति ने भी हाथ में बैग लिए जाने के लिए तैयार खड़ा है। क्या वह उसे थोड़ा बस थोड़ा सा समय नहीं दे सकता था? इतना कि वह अपनी, उन दोनों की बेटी का मातम मना सके।[13]

फरिश्ते निकले उपन्यास में दांपत्य संबंधों में बिखराव का कारण भी बच्चा ही था। शुगर सिंह दूसरी शादी बेला बहू से बच्चे के लिए ही किया था। दोष तो शुगर सिंह ये था परन्तु दोषी बेला को ही ठहराया जाता ''शुगर सिंह को दोषी मानने वाले उस गाँव में तो नहीं थे। औरत की तरह वहाँ बेला ही बाँझ प्रचारित होने लगी। हाय–हाय करते हुए शुगर सिंह पर तरस जाने वाले बेला के तन्दुरस्त शरीर को जब–जब कोसते 'हथिनी हो रही है खा खा के। औलाद के नाम पर भुसाटिया तक पैदा नहीं कर पाई।[14]

एक दिन दोनों के बीच झगड़ा हो गया। शुगर सिंह बोला – ''दूसरी ले आऊँगा, तब देखना अपनी दुर्गति अरे मर्द के लिए औरतों की क्या कमी ? उन्हें तो पेट को अन्न तन को कपड़ा और सिर के लिए छत चाहिए बस। जैसे गाय भैंस घोड़ी पाली कैसे ही औरत..... ''ते हिजड़ा, खसिया। दूसरी तीसरी चौथी ले आ तेरी ही मूदें बारकर जाएंगीं ये गाय भैंस घोड़ी नहीं, औरतें होगी। मेरी तरह की औरत जैसी औरतें।[15]

नदी उपन्यास में भी दामपत्य जीवन का बिखराव बेटे भविष्य के मृत्यु के कारण ही हुआ। आकाशगंगा को डॉ. सिन्हा कहते – ''तुमसे शादी करने की गलती की मैंने, गोरे चेहरे को देख माता जी ढुल गई थी, पर तुम्हारा रक्त ही दूषित है, तुम्हारे दो भाई ल्यूकीमिया से मरे और मेरा भविष्य भी तुम्हारे जहर भरे रक्त की भेंट चढ़ गई। तुमसे मुझे अब कुछ लेना देना नहीं। जो चाहो करों, जहाँ चाहो जाओ।[16]

स्त्री पात्रों का संघर्ष एवं जिजीविषा –

विवेचित उपन्यास में स्त्री पात्र जीवन और जगत से संघर्ष करते हैं, जीवन जीने की जिजीविषा का नही त्यागती, फरिश्ते निकले उपन्यास में बेला बहू ने परिवार और समाज की चुनौतियों को स्वीकार किया। बेला बहू के पिता की मृत्यु के बाद बेला बहू की माँ संघर्ष को जारी रखा, उसने नात रिश्तेदारों को सहारा न बनाकर खुद के दम पर बेला बहू को पालने के लिए कृतसंकल्प थी, अम्मा मुसीबतों से लड़ने के लिए तैयार थी। और अम्मा अब नए रूप में थी। धोती का कछोटा भारकर हल बैल हाँकती हई। शाम को घर आकर कहती ''जनी आदमी जैसा काम करे तो लोग तमाशा बना देते हैं। तमाशा कि वह अपना काम छोड़ दें। कहते–कहते अम्मा का लम्बोतरा सांवला चेहरा गमगीन हो जाता है।[17]

शुगर सिंह के शुक्राणु में दोष था वह फिर भी बेला बहू को ही दोष देता बच्चे के लिए बेला बहू को ताने भी मारता, लोगों द्वारा भी बेला बहू ताने सुना करती, बेला बहू भी माँ बनना चाहती थी। कौन स्त्री होगी जो माँ न बनना चाहे आखिर माँ ही तो सृष्टि का दूसरा रूप होती है। कौन स्त्री बाँझ बनना पसंद करेगी। कोई नही पुत्र के लिए वह अपने पाहुन भारत सिंह से सम्बन्ध बनाने ये नहीं हिचकिचाई, जिजीविषा इतनी कि गर्भ न ठहरते हुए भी मानसिक रूप से झूठी गर्भावस्था मान बैठी, यह फाल्स प्रेग्नैंसी यानि झूठी गर्भावस्था थी। ऐसी हो जाता है उन औरतों के साथ, जिन पर बच्चे होने के लिए बहुत दबाव डाला जाता है। उनमें बच्चे की लालसा इतनी तीव्र यानि तेज हो जाती है कि एक समय ऐसा

आता है कि वह अपने आप को गर्भवती समझने लगती है। जिन गर्भवती महिलाओं को उसने देखा होता है। उन्हीं के लक्षण धारण कर लेती है। मनोविज्ञान ऐसा हो जाता है कि उनका पेट भी बढ़ने लगता बहुत तो नहीं, रेयर होते है मगर होते तो हैं। इसी को हम फाल्स प्रेगनेंसी कहते हैं।[54]

प्यारे पाहुने.....तुमने रत्ती भर भी झूठ नहीं बोला तुमने जो खेल किया गर्भ के खतरे बचा बचाकर किया। मैं प्यार करूँ या तुम प्यार करो, बीच में बच्चा क्यों आए.....अगर शुगर सिंह नपुंसक है तो पाहुने सरकारी सांड नही है भौज मजा किया अपना बेशकीमती वीर्य बचाकर ले गए। और मै पगली, गर्भ में तुम्हारा फरेब पालती रही। बाँझ न कहलाती तो मेरे साथ ऐसा होता पाहुने कैसा इन साफ है कि मर्द की नपुंसकता छिपी रहती है, मगर बच्चा न देने वाली औरत अपने पूरेपन के साथ भी चन्द सालों में बांझ मान ली जाती है।[18]

नदी उपन्यास में आकाश गंगा के पति डॉ. सिन्हा दोनों बेटियों मरना और सपना के साथ अमेरिका से भारत लौट आये। आकाशगंगा अकेले अमेरिका में भटकती रही, एरिक और अर्जुन ने उसका साथ दिया, कुछ समय के बाद आकाश गंगा को संतान मोह ने भारत खींच लाई यह भारत में आने के बाद उसके सास–ससुर अपनी पोतियों के साथ खुश थे, आकाशगंगा के पति अपने साथ पढ़ाने वाली सहयोगिनी के साथ खुश थे। इन सब स्थितियों एवं परिस्थितियों के बीच आकाश गंगा पुनः संघर्ष कर जीवन अपने स्वाभिमान से, स्वतन्त्र तौर से जीना चाहती थी। जब ससुर बिहारी बाबू ने आकाशगंगा से कहा तो क्या किया जाए? गंगा ने उनका प्रश्न दोहराया करना क्या है? लोछन की जिन्दगी जी कर नहीं रह पाऊँगी। मैं वापस चली जाऊँगी– ''गंगा को अपने स्वर की दृढ़ता पर आश्चर्य हुआ।

मैं अपने को उन पर क्यों थोपूँ? वह नहीं देखना चाहते तो मैं अपनी मनहूस शक्ल उन्हें क्यों दिखाऊँ[19]

वह लौटने की तैयारी करती हो, बेटियाँ उदास है उसका दिल भी कितना बैचेन है, पर करे क्या पीछे रूकना सम्भव नहीं, अब तो आगे अपनी राह स्वयं खोजनी होगी। वह बोस्टन नहीं जाना चाहती, वैसे वहाँ अस्पताल में नौकरी मिल ही जायेगी, पर बिना अनुभव के जो मिलेगा। वह करना नहीं, चाहती अपरिचित, स्त्री–पुरूषों के पाखाने पेशाब की सफाई करना उसे मंजूर नहीं है।

वह एक युनिवर्सिटी प्रोफेसर की पत्नी है, सबसे निचले स्तर की नौकरी उसकी इज्जत के अनुकूल नहीं है या फिर क्लर्क की जगह सुबह आठ से पाँच तक काम, फिर छुट्टी अगर ऐसी नौकरी मिले तो वहन नहीं करेगी पर सबसे बड़ा डर यह है कि उसके लौटने की बात छिपेगी नहीं और वह अर्जुन सिह का सामना नहीं करना चाहती।[20]

पंचकन्या उपन्यास में अजमेर मेले में कालबेलिया समाज की औरतो के संघर्ष का चित्रण – आज इस मेले की भीगी भाप में उसकी सुप्त आकांक्षा के बीच अंखुआ आए है, मेले की सारी भीड़ के आकर्षण का केन्द्र स्वयं को पाकर सब हैरानी से देख रहे है उसको उसने पलकों से उंगली का छल्ला उठा लिया है, उन्हीं पलकों से जिनकी जरा सी उठान और झुकाव से उसने सबकों वशीभूत कर लिया है। सारे मर्द उसे मंत्रविद्ध से देख रहे है और औरतें हैरान है, उसकी दे हके लयात्मक लचीलेपन से खटाखट भीड़ में से कैमरे की लाइट चमक रही है, एक अंग्रेज तो लेटकर, बैठकर उकडू होकर हाथी की होदी पे चढ़कर उसकी फिल्म शूट कर रहा था। वह कुछ अलग है सबसे, एक अनूठी कलाकार। नाचती और भी है पर बिना चेहरे के भावों के, बस दे हके कर तब और लहंगे के घेर धुमेर में उलझी रहती है वह तो ताल और लास्य का अद्‌भूत शिक्षण है। नाच खत्म कर के वह हल्का सा हाफंती हुई शांत होकर भैंरू के पास आ बैठी थी।[21]

प्रज्ञा देख रही थी कि पुष्कर मेंले मे कालबेलिया औरतों का हुजूम घूमता है। कब किस होटल में, तम्बू में, गेस्ट हाउस में से शो करने का बुलावा आ जाए। दिन–रात रेगिस्तान में साँप पकड़ने वाले से पैरों की यह घुमन्तू प्रजाति पशु मेले में अपनी प्रतिभा, अपना सौन्दर्य भुनाने आ जाती है। सौन्दर्य भुनाना, किन्हीं सस्ते गलीज अर्थों में कतई नहीं है। विदेशी पर्यटक रेगिस्तान की इन भुवन मोहिनियों के चित्र उतारते हैं तभी तो एक सुनसान गली में सुरेश की पत्नी एक कैमरा थामें अमेरीकी सैलानी के बिल्कुल सामने जा खड़ी हुई।[22]

सुशीला हाकभौंरे का उपन्यास नीला आकाश में नीलिम काफी पढ़ी लिखी लड़की है। वह और पढ़ना चाहती हैं परन्तु परिवार और समाज के लोग उसे शादी के लिए दबाव बना रहे हैं मैं बी.ए. के बाद एम.ए. की डिग्री लूंगी। मुझे अभी शादी नही करना है। यदि तुम नहीं मानोगे तो मैं कभी शादी नहीं करूंगी। दादा दादी और पापा मम्मी नीलिमा के बचपन मे जिद्‌दी स्वभाव को जानते हैं। वे सोचने लगे यदि इस जिद्‌दी लड़की ने यह बात अपने मन में ठान ली, तो फिर इसके सामने हम क्या कर सकते हैं।[23]

कस्बार्ड सियोन की पात्र सुगंधा की माँ तलाक के शुरूआती दिनों में खूब संघर्ष रही, खुद के संकल्प पर जीवन की जिजीविषा को बनाये रखी यां को विधिवत तलाक नहीं मिला। नाते रिश्तेदारों ने हस्तक्षेप कर के, परिवार खानदान की बदनामी का बास्ता देकर मां और पापा के बीच समझौता करा दिया। तय यह हुआ कि मां स्वतंत्र रहेगी। पापा भी स्वतंत्र रहेंगें। पापा थेरी पढाई–लिखाई का खर्च देंगे। लेकिन माँ ने खर्च लेने से मना कर दिया। वे किसी भी मूल्य पर मुझे पापा के ऋण से मुक्त रखना चाहती थी।

यदि चाहे तो समय आने पर कन्यादान करने आ जाइएगा। अपनी बेटी को पालने में मैं सक्षम हूँ। मुझे आपसे किसी भी तरह की कोई आर्थिक मदद नहीं चाहिए।[24]

परितत्व लंकेश्वरी उपन्यास में जब राम और रावण के बीच युद्ध चल रहा था युद्ध की सूचना देने वाले महिषी को सूचना

दे रहा था। त्रिजटा मनवोदी के पास बैठी थी, लंकापति के लिए अमंगलकारी घटनाएं घट रही थी, लंकेश्वरी बीच–बीच में बेचैन सी हो जा रही थी इसी बीच त्रिजटा लंकेश्वरी के जीवन संघर्षों और धर्म को बतला हुए ढाढस देती है और कहती है आप पृथ्वी शांति और सहन शक्ति की प्रतीक महिला हैं इस महिमहालय में ऐसी स्थिति में मित्र सेवक और पत्नी की ही नहीं धीरज और धर्म की भी परीक्षा हो जाती है।

आप अवश्य सफल होगी आप अपने स्वाभाविक स्वरूप में रहिए आपकी आँखों की ऐसी विकट स्थिति, किसी ने पूर्व में नही देखी। आप सहज हो जाइए सामान्य। जो विधि ने लिखा है वह होकर रहेगा। आपने आजीवन इन भंयकर स्थितियों को टालने के लिए ही प्रयत्न किए है। अति सुख के दिनों में भी आशकाओं से ग्रसित रही है। मैं चुप थी। वह बोली, आप स्वर्णमय लंका की लंकेश्वरी तो रही, पर परितत्व आगत की आशंकाओं ने कभी आप को तृप्त नहीं होने दिया।[25]

बाचस्पति मित्र शंकरभाव्य की टीका लिखने में इस भांति लीन हुए की उनको दीन दुनिया की सुध न थी, नवविवाहित भामती इंस दौरान उनकी सेवा मे ंसमर्पित थी। उसने वाचस्पति के किसी काम में बाधा न डाला, भामती की जीवन दशा, संघर्ष उसके व्यक्तित्व को देखा जा सकता है।, भामती का व्यक्तित्व स्वयमेव दो भागों में विभक्त हो जाता है। एक भाग दूसरे भाग से सदा प्रश्नोत्तर करता रहता है। अकेली करे भी तो क्या अपने अपने अवकाश पर निकटवर्ती सखी सहेलियां आकर बैठती बोलती। बतियाती, वैसे अधिकांश समय सबके पदों में कार्य अधम है। पति संतान, सास–ससुर, खेत–खलिहान, गाय–बैल इतने प्रकार का काम रहता है कि समेटा नहीं जाता है। एक भामती है जिसके पास एक ही प्रकार का काम होता है स्वामी की परिचर्या का प्रकार भी भिन्न है। भोजन सभी स्त्रियां बनाती है। दीप भी सभी जलाती है। बाती भी उकसाती है परन्तु दिन–रात की बाती पर दृष्टि मात्र भामती जमाकर रखती है।

क्या ऐसा ही जीवन की कल्पना की थी भामती ने? हाँ और ना, दोनों संवाद मन में, वाचस्पति गहन लेखन में जुटे हैं। उसमें दीप जलाकर सहयोग करना है। इसलिए हाँ परन्तु मुखमण्डल पर दृष्टि विनिमय भी न हो, सामान्य बातचीत भी न हो ऐसा सोच न था।[26]

निष्कर्ष –

21वीं सदी का बदलता परिदृश्य ना केवल उपन्यासों बल्कि सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य में नारी सशक्तीकरण का प्रभाव दिखाई देता है। प्रस्तुत शोध शीर्षक के अध्ययाय के अन्तर्गत यदि हम संक्षिप्त रूप से देखे तो ये तथ्य हमसे छिपे हुए नहीं है कि बदलते परिदृश्य में नवीन स्त्री उपन्यास लेखिकाओं ने हिन्दी साहित्य जगत को अपनी अलौकिक लेखन शैली से सुशोभित किया है। इसके साथ ही समाज के सम्पूर्ण परिदृश्य संघर्ष जीवन के द्वन्द्व सजीव रूप में विविध आयामों के साथ विवेचित किया गया है। स्त्री लेखिकाओं ने अपने लेखन में सामाजिक जीवन को प्रेम एवं नैतिकता के द्वन्द्व को स्त्री पात्रों के माध्यम से उनके व्यक्तिगत, पारिवारिक जीवन को बहुत ही सरल एवं सहज ढंग से विवेचित किया है।

संदर्भ सूची

1. डॉ. विरेन्द्र सिंह यादव : महिला कथाकारों के उपन्यासों में समय, समाज और संवेदना, पैसिफिक पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृ.सं 31
2. इन्टरनेट विकीपिडिया एक मुक्त ज्ञान कोष
3. कमल कुमार, पासवर्ड, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.सं. 59
4. वही, पृ.सं. 139
5. उषा प्रियम्वदा, वही, पृ.सं. 67
6. निर्मला भुराड़िया, गुलाम मंडी, पृ.सं. 139
7. कमल कुमार, पासवर्ड, पृ.सं. 50
8. मनीषा कुलश्रेष्ठ, पंचकन्या, पृ.सं. 191
9. मनीषा कुलश्रेष्ठ, पंचकन्या, पृ.सं. 217
10. शरद सिंह, कस्बाई सिमोन, पृ.सं. 50
11. वही, पृ.सं. 49
12. वही, पृ.सं. 36
13. जयश्री रॉय साथ चलते हुए, पृ.सं. 26
14. मैत्रेयी पुष्पा, फरिश्ते निकले, पृ.सं. 33
15. वही, पृ.सं. 34
16. उषा प्रियम्वदा, वही, पृ.सं. 22
17. मैत्रेयी पुष्पा, फरिश्ते निकले, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.सं. 18
18. वही, पृ.सं. 58
19. उषा प्रियम्वदा, वही, पृ.सं. 86
20. वही, पृ. सं. 91
21. मनीषा कुलश्रेष्ठ, पंचकन्या, पृ.सं. 124
22. वही, पृ.सं. 126
23. सुशीला टाकभौरे, नीला आकाश, पृ.सं. 94
24. शरद सिंह, कस्बाई सिमोन, पृ.सं. 53
25. मृदुला सिंन्हा, परितप्त, लंकेश्वरी, पृ.सं. 227
26. उषा किरण खान, भामती, पृ.सं. 75

RRIJM 2015, All Rights Reserved